

नं. १

संजीव®

बुक्स

संस्कृत-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए
पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2025 के प्रश्न-पत्र का समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2026

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 380/-

- प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3

Email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
Website : www.sanjivprakashan.com

- ◎ प्रकाशकाधीन

- मूल्य : ₹ 380.00

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

★★★★★

- ❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

Email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

- ❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे हाने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

- ❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान

पाठ्यक्रम

संस्कृत साहित्य-कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

| प्रश्न-पत्र | समय (घण्टे) | प्रश्न-पत्र के लिए अंक | सत्रांक | पूर्णांक |
|-------------|-------------|------------------------|---------|----------|
| एक पत्र | 3.15 | 80 | 20 | 100 |

एकम्-प्रश्नपत्रम्

अवधि : सपादहोरात्रयम् (3½)

पूर्णांक: 80

| क्र.सं. | अधिगम-क्षेत्रम् | अङ्कः |
|---------|--------------------------------|-------|
| 1. | पठित-अवबोधनम् | 32 |
| 2. | संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः | 08 |
| 3. | छन्दोऽलङ्काराः | 10 |
| 4. | अपठित-अवबोधनम् | 08 |
| 5. | रचनात्मककार्यम् | 12 |
| 6. | व्याकरणम् | 10 |

1. पठित-अवबोधनम्— 32
1. पाठ्यपुस्तकात् बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः (सप्त प्रश्नाः) $1 \times 7 = 7$
 2. अंशत्रयम्—(एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः च) $5+5+5=15$
- प्रश्न-वैविध्यम्—
- (क) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) 1
 - (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) 2
 - (ग) भाषिककार्यम् (बहुविकल्पात्मकप्रश्नद्वयम्) $1 \times 2 = 2$
- (i) विशेषण-विशेष्यचयनम्। 1
 - (ii) कर्तृक्रियापदचयनम्। 1
 - (iii) सर्वनामसंज्ञाप्रयोगः। 1
 - (iv) पर्याय-विलोमपदचयनम्। 1
3. कथनानि आश्रित्य प्रश्ननिर्माणम् (त्रयाणाम्) 3
 4. हिन्दीभाषायां सप्रसङ्गं भावार्थलेखनम् (एकस्य पद्यांशस्य सूक्तवचनस्य वा) 2
 5. अन्वयलेखनम् (एकस्य पद्यस्य) 2
 6. एकस्य गद्यपाठस्य हिन्दीभाषायां सारलेखनम् 3

| | | |
|-------|--|------------------|
| 2. | संस्कृतसाहित्येतिहासस्य सामान्यं परिचयः— | 08 |
| (अ) | प्राचीन-संस्कृतसाहित्येतिहासः (लघूतरात्मकप्रश्नद्वयम्) | $2 \times 2 = 4$ |
| (ब) | आधुनिक-संस्कृत-साहित्यस्य परिचयः (लघूतरात्मकप्रश्नद्वयम्) | $2 \times 2 = 4$ |
| 3. | छन्दोऽलङ्काराः | $5+5=10$ |
| (क) | छन्द-परिचयः— | 5 |
| (i) | लघुगुरुविवेकः, छन्दसः सामान्यज्ञानम् (बहुविकल्पात्मकाः) | 1 |
| (ii) | अधोलिखितछन्दसां सोदाहरणं लक्षणम्— (लघूतरात्मकाः) (द्वयोः एकस्य) अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, वंशस्थ, वसन्ततिलका, भुजंगप्रयातम्, हरिणीः, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्। | 2 |
| (iii) | पद्यांशेषु गणचिन्हपूर्वकम् छन्दज्ञानम् (द्वयोः एकस्य) (लघूतरात्मकाः) | 2 |
| (ख) | अलङ्काराः— | 5 |
| 1. | अधोलिखित-अलङ्काराणाम् उदाहरणसहितलक्षणज्ञानम्— (द्वयोः एकस्य) | 3 |
| (i) | शब्दालङ्काराः—अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः | |
| (ii) | अर्थालङ्काराः—उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यासः, दीपकम्, दृष्ट्यान्तः, अतिशयोक्तिः, विभावना, विशेषोक्ति, व्यतिरेकः। | |
| 2. | (i) पद्यांशेषु अलङ्कारस्य नामोल्लेखम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूतरात्मकप्रश्नमेकम्) | 1 |
| (ii) | कस्यापि अलङ्कारस्य सामान्य लक्षणज्ञानम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूतरात्मकप्रश्नमेकम्) | 1 |
| 4. | अपठित-अवबोधनम्— | 08 |
| | 80-100 शब्दपरिमितः एकः सरलः अपठितः गद्यांशः (सम्पादितः सरलः साहित्यिकः अंशः) | |
| | प्रश्नवैविध्यम्— | |
| (i) | एकपदेन-उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्) | $1 \times 2 = 2$ |
| (ii) | पूर्णवाक्येन-उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) | $2 \times 1 = 2$ |
| (iii) | भाषा-सम्बद्धकार्यम् (प्रश्नत्रयम्) | $1 \times 3 = 3$ |
| (क) | कर्तु-क्रियापदचयनम् | |
| (ख) | विशेषण-विशेष्य-प्रयोगः | |
| (ग) | सर्वनामप्रयोगः/संज्ञाप्रयोगः | |
| (घ) | शब्दार्थचयनम्/विलोमचयनम् | |
| (iv) | समुचितशीर्षकप्रदानम् | 1 |

| | | |
|---|--|-----------|
| 5. | रचनात्मककार्यम्— | 12 |
| (i) | प्रदत्तरूपरेखया कथासंयोजनम्/क्रमायोजनम् | 4 |
| (ii) | कमपि विषयं स्वीकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृतभाषायां लघुनिबन्धलेखनम् | 4 |
| (iii) | हिन्दीभाषायां लिखितानां षड्वाक्येषु चतुर्णा वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादकार्यम् | 4 |
| 6. | व्याकरणम्— | 10 |
| (प्रश्ना:—बहुचयनात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूतरात्मकाः प्रश्नाः च) | | |
| (3) | (5) | (2) |
| (i) | स्वरसन्धिः, व्यञ्जनसन्धिः (प्रमुख सूत्राणि उदाहरणानि च लघुसिद्धान्तकौमुद्यानुसारम्) | 3 |
| (ii) | कारकाणि—उपपदविभक्तीनां सूत्रसहितं ज्ञानम् | 3 |
| (iii) | प्रत्ययाः (सूत्रसहितं सोदाहरणं सामान्यज्ञानं प्रयोगाश्च) —तत्वत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शत्, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्। | 4 |

निर्धारितपुस्तकानि—

शाश्वती (भाग 2) (राष्ट्रीय-शैक्षिक-अनु. एवं प्रशिक्षण परिषदा प्रकाशितम्)

नोट— विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

1. पठित अवबोधनम्

शाश्वती (द्वितीयो भागः)

| | | |
|---------------|--------------------------------------|---------|
| मङ्गलम् | 1–2 | |
| प्रथमः पाठः | विद्ययाऽमृतमशुते | 2–15 |
| द्वितीयः पाठः | रघुकौत्संवादः | 15–40 |
| तृतीयः पाठः | बालकौतुकम् | 40–59 |
| चतुर्थः पाठः | कर्मगौरवम् | 59–75 |
| पञ्चमः पाठः | शुकनासोपदेशः | 75–90 |
| षष्ठः पाठः | सूक्तिसुधा | 90–109 |
| सप्तमः पाठः | विक्रमस्यौदार्यम् | 109–124 |
| अष्टमः पाठः | कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम् | 124–132 |
| नवमः पाठः | दीनबन्धुः श्रीनायारः | 132–142 |
| दशमः पाठः | योगस्य वैशिष्ट्यम् | 142–160 |
| एकादशः पाठः | कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम् | 160–169 |

2. संस्कृतसाहित्येतिहासस्य सामान्यं परिचयः

| | |
|---------------------------------------|---------|
| (अ) प्राचीन संस्कृत-साहित्य का इतिहास | 170–198 |
| (ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास | 199–207 |

अभ्यासार्थ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर-

- (अ) प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास 207-221
 (ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास 221-227

3. छन्दोऽलंकार-परिचयः

- (क) छन्दः परिचय 228-242
 (ख) अलंकार-परिचयः 242-254

4. अपठित-अवबोधनम्

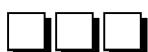
- 80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः 255-273

5. रचनात्मक-कार्यम्

- (i) प्रदत्तरूपरेखया कथा संयोजनम्/क्रमायोजनम् 274-288
 (ii) लघु निबन्ध-लेखनम् 289-295
 (iii) अनुवाद-कार्यम् 295-314

6. व्याकरणम्

- (i) सन्धिप्रकरणम् 317-342
 (ii) कारकाणि 342-369
 (iii) प्रत्ययाः (सूत्रसहितं सोदाहरणं सामान्यज्ञानं प्रयोगाश्च) 369-384



उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025

संस्कृतसाहित्यम्

समय : 3 घण्टे 15 मिनट (सपाद त्रिवादनम्)

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थिभ्यः सामान्य निर्देशः

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रस्योपरि नामांकः अनिवार्यतः लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरम् उत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
4. प्रत्येकं प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

खण्डः—‘अ’

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्नाः—

- | | | | | |
|--------|---|-----|--------------|---------------------------------|
| (i) | “कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्” इति पाठः कुतः संकलितः? | | | [1] |
| (अ) | रामायणः | (ब) | शिवराजविजयतः | (स) महाभारततः (द) उत्तररामचरितः |
| (ii) | इह कानि कुर्वन् शतं समाः जिजीविषेत्? | | | [1] |
| (अ) | कर्मणि | (ब) | पठनानि | (स) भ्रमणानि (द) भोजनानि |
| (iii) | शरदधनं कः नार्दति? | | | [1] |
| (अ) | मयूरः | (ब) | पिकः | (स) चातकः (द) काकः |
| (iv) | सततं कानि क्षीयन्ते? | | | [1] |
| (अ) | पुस्तकानि | (ब) | वस्त्राणि | (स) धनानि (द) भूषणानि |
| (v) | शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्यः कोऽस्ति? | | | [1] |
| (अ) | विकल्पः | (ब) | निद्रा | (स) आगमः (द) अभावः |
| (vi) | श्रीनायारः कस्य अधीने वर्षत्रयेभ्यः कार्यं करोति? | | | [1] |
| (अ) | बिहार सर्वकारस्य | | | (ब) राजस्थान सर्वकारस्य |
| (स) | ओडिशा सर्वकारस्य | | | (द) केन्द्र सर्वकारस्य |
| (vii) | प्रीतिलक्षणं कतिविधम्? | | | [1] |
| (अ) | त्रिविधम् | (ब) | षड्विधम् | (स) सप्तविधम् (द) पञ्चविधम् |
| (viii) | “पापानिवारयति योजयते हिताय” इत्यत्र किं छन्दः? | | | [1] |
| (अ) | वसन्ततिलका | (ब) | मालिनी | (स) उपजातिः (द) आर्या |
| (ix) | “शकृत्” इत्यस्य शब्दस्य कोऽर्थः? | | | [1] |
| (अ) | अजस्रम् | (ब) | एकवारम् | (स) जलम् (द) पुरीषम् |
| (x) | “अध्यवसायस्य सिद्धत्वे” कोऽलङ्कारः निगद्यते? | | | [1] |
| (अ) | श्लेषः | (ब) | रूपकम् | (स) अतिशयोक्तिः (द) उत्त्रेक्षा |
| 2. | यथानिर्देशं प्रकृतिप्रत्ययौ योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत— | | | [4×1=4] |
| (i) | श्रीनायारः पत्रमेकं आसीत्। (पद् + शत्) | | | [1] |
| (ii) | सः अधिकारं दत्तवान्। (जीव् + तुमुन्) | | | [1] |

| | |
|--|-----------|
| (iii) बालकस्य प्रशंसनीया । (पटु + तल्) | [1] |
| (iv) सदा स्वच्छं जलं । (पा + यत्) | [1] |
| 3. अतिलघृतरात्मक प्रश्नाः:- | [10×1=10] |
| (i) भवभूते: सर्वोत्कृष्ट्या रचना का? | [1] |
| (ii) श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्यायाः सन्ति? | [1] |
| (iii) महाकवि बाणभट्टस्य कथाकाव्यं किम्? | [1] |
| (iv) महाभाष्यं केन रचितम्? | [1] |
| (v) वेदस्य सारः कुत्र समाहितो वर्तते? | [1] |
| (vi) 'जयपुरविलासः' इति खण्डकाव्यं केन रचितम्? | [1] |
| (vii) 'गोविन्द वैभवम्' इति भक्तिकाव्यस्य रचयिता कः? | [1] |
| (viii) 'यात्राविलासः' इति प्रौढः उपन्यासः केन रचितः? | [1] |
| (ix) आचार्य मधुकर शास्त्रिणः महाकाव्यस्य नाम किम्? | [1] |
| (x) 'मोहभङ्गम्' नामकं प्रसिद्धं महाकाव्यं केन लिखितम्? | [1] |
| 4. अधोलिखित-श्लोकांशस्य अलङ्कारलक्षणं लिखत । | |
| निःश्वासान्ध्य इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते । | [1] |

खण्डः-'ब'

| | |
|--|---------------|
| 5. अधोलिखितयोः:-छन्दसोः एकस्य छन्दसः लक्षणमुदाहरणञ्च लिखत— | [2] |
| (क) उपजातिः | (ख) शिखरिणी |
| 6. अधोलिखितः श्लोकांशयोः एकस्य गणचिह्नं प्रदर्शयन् छन्दसः नामोल्लेखं कुरुत । | [2] |
| (क) हिमालयो नाम नगाधिराजः। | |
| (ख) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा । | |
| 7. अधोलिखित-श्लोकांशयोः एकस्य हिन्दीभाषायां सप्रसङ्गं भावार्थं लिखत । | [2] |
| (क) कोटीश्चतस्रो दश चाहर । | |
| (ख) क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाभूषणं भूषणम् । | |
| 8. अधोलिखित श्लोकस्य अन्वयं लिखत— | [2] |
| बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते । | |
| तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ | |
| 9. अधोलिखितपदानां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिविच्छेदं कुरुत । | [2+2=4] |
| (क) अनेजदेकम् | (ख) नरेन्द्रः |
| 10. अधोलिखितम् अपठितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत । | [8] |
| यो मनुष्यो यत्र जन्म लभते, सा तस्य जन्मभूमिः । जन्मभूमिः मनुष्यस्य सर्वदैव आदरस्य पात्रं भवति । यत्र कुत्रापि गतो मनुष्यों जन्मभूमिं सदा स्मरत्येव । भारतवर्षमिदमस्माकं जन्मभूमिः । भारतवर्षं चास्माकं देशः । स्वदेशस्य कृते सर्वेषां हृदये सम्मानम् आदरश्च भवतः । अद्यत्वे संसारे सर्वे देशाः स्वदेशस्योन्नतिसाधने संलग्नाः सन्ति । वयं भारतीयाः साम्रतं स्वाधीनाः स्मः । अधुना सर्वस्मिन् संसारे भारतवर्षस्य आदरो भवति । | |
| (क) एकपदेन उत्तरत— | [1] |
| अस्माकं जन्मभूमिः का? | |
| (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— | [2+2=4] |
| (i) अद्यत्वे सर्वे देशाः कुत्र संलग्नाः सन्ति? | |

- (ii) अधुना कुत्र भारतवर्षस्य आदरो भवति?
- (ग) भाषासम्बद्धकार्यम्—
 (i) वयं भारतीयाः स्वाधीनाः स्मः। इत्यत्र क्रियापदं किम्?
 (ii) मनुष्यः सदा जन्मभूमिं स्मरति। इत्यत्र कर्तृपदं लिखत।
- (घ) उपर्युक्त-गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। [1]

खण्डः-'स'

11. अथोलिखितं पठितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]

तावदकस्मादुत्थितो महान् ज्ञज्ञावातः एकः सायं समयप्रयुक्तः स्वभाववृत्तोऽन्धकारः, स च द्विगुणितो मेघमालाभिः। ज्ञज्ञावातोद्भौतैः रेणुभिः शीर्णपत्रैः कुसुमपरागैः शुष्कपुष्ट्यैश्च पुनरेष द्वेगुण्यं प्राप्तः। इह पर्वत-श्रेणीतः पर्वतश्रेणी वनाद् वनानि, शिखराच्छखराणि प्रपातात् प्रपातान्, उपत्यकात् उपत्यकाः न कोऽपि सरलो मार्गः, नानुद् भेदिनी भूमिः, पन्थाः अपि च नावलोक्यते।

- (क) एकपदेन उत्तरत— [1]

अकस्मात् कः उत्थितः?

- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— [2]

अन्धकारः काभिः द्विगुणितः?

- (ग) भाषासम्बद्धकार्यम्— [1]

(i) “न कोऽपि सरलो मार्गः”। इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

(अ) न (ब) अपि (स) सरलः (द) मार्गः

(ii) “पन्थाः अपि च नावलोक्यते”। इत्यत्र कर्तृपदं लिखत— [1]

(अ) पन्थाः (ब) अपि (स) च (द) अवलोक्यते

अथवा

चतुर्णा परस्परं विवादो लग्नः। ततो ब्राह्मणो राजसमीपमागत्य चतुर्णा विवादवृत्तान्तम् कथयत्। राजापि तत् श्रुत्वा तस्मै ब्राह्मणाय चत्वार्यपि रत्नानि ददौ। इति कथां कथयित्वा पुत्तलिका राजानमवदत्, भो राजन्। त्वय्येर्वर्विध— सहजमौदार्यं विद्यते चेदस्मिन् सिंहासने समुपविश। तत् श्रुत्वा राजा तृष्णीमासीत्।

- (क) एकपदेन उत्तरत— [1]

कस्मै रत्नानि ददौ?

- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत— [2]

ब्राह्मणः राजसमीपमागत्य किम् अकथयत्?

- (ग) भाषासम्बद्धकार्यम्— [1]

(i) “त्वयि सहजमौदार्यं विद्यते”। इत्यत्र वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

(अ) त्वयि (ब) विद्यते (स) सहजम् (द) औदार्यम्

(ii) तत् श्रुत्वा राजा तृष्णीमासीत्। [1]

इत्यत्र क्रियापदं लिखत—

(अ) तत् श्रुत्वा (ब) आसीत् (स) तृष्णीम् (द) राजा

12. अथोलिखितं श्लोकं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]

सहसा विदधीत न क्रियामिवेकः परमापदां पदम्

वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥

- (क) एकपदेन उत्तरत— [1]

सहसा किं न विदधीत?

- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—
परमापदं पदं कः? [2]
- (ग) भाषिककार्यम्—
(i) सम्पदः विमृश्यकारिणं हि वृणते।
इत्यस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?
(अ) वृणते (ब) सम्पदः
(स) विमृश्यकारिणम् (द) हि [1]
- (ii) गुणलुभ्याः सम्पदः हि वृणते।
इत्यत्र विशेषणपदं लिखत—
(अ) गुणलुभ्याः (ब) हि (स) सम्पदः (द) वृणते [1]
- अथवा
- असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनोजनाः॥
- (क) एकपदेन उत्तरत—
ते लोकाः के? [1]
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—
ते लोकाः केन आवृताः? [2]
- (ग) भाषिककार्यम्—
(i) ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति। इत्यत्र कर्तृपदं किम्?
(अ) तान् (ब) ते (स) अभिगच्छन्ति (द) प्रेत्य [1]
(ii) ये के आत्महनो जनाः। इत्यत्र विशेषणपदं लिखत—
(अ) ये (ब) आत्महनः (स) के (द) जनाः [1]
13. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]
- | | | |
|-------------|---|--|
| सागरिका | — | कः तात्पर्यः अस्य एतादूशस्य दीर्घवाक्यस्य? किञ्चिदपि नावगम्यते |
| योगाचार्यः | — | अलं चिन्तया, एकैकं कृत्वा बोधयामि। |
| यमः | — | अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः। |
| नियमः | — | शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः। |
| आसनम् | — | स्थिरसुखमासनम्। |
| प्राणायामः | — | तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः। |
| प्रत्याहारः | — | स्वविषयसम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः। |
| धारणा | — | देशबन्धश्चित्स्य धारणा। |
| ध्यानम् | — | तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्। |
| समाधिः | — | तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः। |
- (क) एकपदेन उत्तरत—
का धारणा? [1]
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—
के यमाः? [2]
- (ग) भाषिककार्यम्—
(i) स्थिरसुखमासनम् इति कथयन्ति। [1]

इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

(अ) इति (ब) कथयन्ति (स) आसनम् (द) स्थरसुखम्

(ii) अलं चिन्तया, एकैकं कृत्वा बोधयामि।

अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं लिखत—

(अ) चिन्तया (ब) एकैकम् (स) कृत्वा (द) बोधयामि

अथवा

अरुन्धतीः — अतिजवेन दूरमतिक्रान्तः स चपलः कथं दृश्यते?

बटवः — पश्यतु कुमारस्तावदाशचर्यम्।

लवः — दृष्टमवगतं च। नूनमा श्वमेधिकोऽयमश्वः।

बटवः — कथं ज्ञायते?

लवः — ननु मूर्खीः! पठितमेव हि युष्माभिरपि तत् काण्डम्। किं न पश्यथ? प्रत्येकं शतसंख्या: कवचिनो दण्डिनो निषङ्गिणश्च रक्षितारः यदि च विप्रत्ययस्तपृच्छत।

(क) एकपदेन उत्तरत—

सः चपलः कथं दूरमतिक्रान्तः?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

रक्षितारः कीदृशाः सन्ति?

(ग) भाषिककार्यम्—

(i) नूनमाश्वमेधिकोऽयमश्वः।

इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?

(अ) अश्वः (ब) नूनम् (स) अयम् (द) आश्वमेधिकः

(ii) तत्काण्डं किं न पश्यथ? इत्यत्र क्रियापदं किम्?

(अ) तत्काण्डम् (ब) किम् (स) पश्यथ (द) न

14. रेखांकितपदेषु प्रश्ननिर्माणं कुरुत । (केषाङ्गित् त्रयाणाम्)

[3×1=3]

(क) तस्य राज्येन सह कश्चित् सम्पर्कः नास्ति ।

(ख) मरालस्य मानसं न रमते ।

(ग) अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति ।

(घ) त्वं कर्म कुरु ।

(ङ) अविद्यया मृत्युं तरति ।

15. अधोलिखितयोः अलङ्कारयोः कस्यचिद् एकस्य लक्षणम् उदाहरणञ्च लिखत ।

[3]

(क) श्लेषः:

(ख) व्याजस्तुतिः:

खण्डः—‘द’

16. अधोलिखितरेखाङ्गितपदान् आधारीकृत्य विभक्तिं तत्कारणञ्च लिखत—(केषाङ्गित् चतुर्णाम्)

[4×1=4]

(क) शिष्यः गुरुं प्रति नमस्करोति ।

(ख) पत्नी स्वपतिना सह आपणं गतवती ।

(ग) ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति ।

(घ) अलं बिवादेन ।

(ङ) जनकाय नमः ।

(च) धनात् ज्ञानं गुरुतरम् ।

17. निम्नलिखितेषु कमपिविषयं स्वीकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृतभाषायां निबन्धं लिखत । [5]
- (क) संस्कृते विज्ञानम् ।
 - (ख) महाकविः कालिदासः ।
 - (ग) संस्कृतदिवसः ।
18. अधोलिखित वाक्यानां संस्कृतभाषायाम् अनुवादः करणीयः । (केषाञ्चित् पञ्चानाम्) [5×1=5]
- (क) हम सब पढ़कर खेलते हैं ।
 - (ख) छात्रों ने क्यों नहीं पढ़ा?
 - (ग) ईश्वर ने रक्षा की ।
 - (घ) तुम वहाँ जाओ ।
 - (ङ) नदियों में गङ्गा पवित्र है ।
 - (च) विष्णु वैकुण्ठ में वास करते हैं ।
 - (छ) ग्राम के दोनों ओर बन है ।
 - (ज) विद्या से यश होता है ।
-

संस्कृत कक्षा-XII

1. पठित अवबोधनम्

शाश्वती (द्वितीयो भागः)

मङ्गलम्

(1)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः

भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनुभि-

र्वशेमहि देवहितं यदायुः ॥ 1 ॥

अन्वयः—देवाः ! (वयं) कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम । अक्षभिः भद्रं पश्येम । स्थिरैः अङ्गैः तनुभिः तुष्टुवांसः देवहितं यदायुः व्यशेमहि ॥

शब्दार्थ—देवाः = हे देवगण ! कर्णेभिः = कानों से । भद्रम् = कल्याणकारी । शृणुयाम = सुने । अक्षभिः = आँखों से । पश्येम = देखें । स्थिरैः अङ्गैः = स्थिर अंगों से । तनुभिः = शरीरों से । देवहितम् = दिव्य । व्यशेमहि = प्राप्त करें ।

हिन्दी-अनुवाद—हे देवगण ! (हम) कानों से कल्याणकारी वचनों को सुनें । आँखों से कल्याणकारी दृश्य देखें । स्थिर अंगों वाले शरीरों से स्तुति करते हुये दिव्य आयु (शतायु) को प्राप्त करें ।

(2)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।

माध्वीनः सन्त्वोषधीः ॥ 2 ॥

अन्वयः—मधु वाता ऋतायते । सिन्धवः मधु क्षरन्ति । ओषधीः नः माध्वीः सन्तु ।

शब्दार्थ—मधु = सुगन्धियुक्त । वाताः = वायु, हवा । ऋतायते = बहे । सिन्धवः = नदियाँ, सागर । मधु = मधुर जल को । क्षरन्ति = युक्त हो । ओषधीः = ओषधियाँ । नः = हमारे लिए । माध्वीः = मधुमय, अमृततुल्य । सन्तु = होवें ।

हिन्दी-अनुवाद—सुगन्धियुक्त वायु बहे, हवा चले । नदियाँ मधुर जल से युक्त हों । ओषधियाँ हमारे लिए अमृततुल्य होवें ।

(3)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्यार्थिवं रजः ।

मधु द्योरस्तु नः पिता ॥ 3 ॥

अन्वयः—नक्तम् मधु (अस्तु), उत उषस मधुमत् (अस्तु), पार्थिवं रजः मधुमत् (अस्तु), द्यौः मधु अस्तु, पिता नः मधु अस्तु ॥

शब्दार्थ—नक्तम् = रात्रि । मधु = मधुमय । उषस = उषाकाल, प्रातःकाल । मधुमत् = माधुर्य युक्त । पार्थिवम् = पृथिवी की । रजः = धूलि । द्यौः = द्यु लोक । पिता = परमेश्वर । नः = हमारे लिए । अस्तु = होवे ।

हिन्दी-अनुवाद—रात्रियाँ मधुमय हों, माधुर्य युक्त होवें । प्रातःकाल मधुर (सुप्रभात) हों । पृथिवी की धूलि भी मधुमय अर्थात् मधुर अन्न को प्रदान करने वाली होवे । द्यु लोक प्रकाशयुक्त होवे । वह परम पिता परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो ।

(4)

**मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गवो भवन्तुः नः ॥ 4 ॥**

अन्वयः—वनस्पतिः नः मधुमान् (अस्तु), सूर्यः मधुमान् अस्तु, गावः नः माध्वीः भवन्तु ॥

शब्दार्थ—वनस्पतिः = वनस्पतियाँ । नः = हमारे लिए । मधुमान् = मधुरता-युक्त । गावः = गायें । माध्वीः = मधुर । भवन्तु = होवें ।

हिन्दी-अनुवाद—वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुरतायुक्त होवें, सूर्य मधुर होवे अर्थात् मधुर अन्नादि प्रदान करने वाला होवे । गायें हमारे लिए मधुर होवें अर्थात् हमें मधुर दूध देने वाली होवें ।

प्रथमः पाठः

**विद्ययाऽमृतमशनुते
(विद्या द्वारा अमरता को प्राप्त करता है)**

पाठ-सार

प्रस्तुत पाठ 'ईशावास्योपनिषत्' से संकलित है । 'ईशावास्यम्' पद से आरम्भ होने के कारण इसे ईशावास्योपनिषत् की संज्ञा दी गई है । यह उपनिषद् यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्ड संहिता का 40वाँ अध्याय है, जिसमें 18 मन्त्र हैं ।

इस पाठ के प्रारम्भ में दो मन्त्रों में ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता को दर्शाते हुए, कर्तव्य भावना से कर्म करने एवं त्यागपूर्वक संसार के पदार्थों का उपयोग एवं संरक्षण करने का निर्देश दिया गया है । आत्मस्वरूप ईश्वर की व्यापकता को जो लोग स्वीकार नहीं करते हैं, उनके अज्ञान को तृतीय मन्त्र में दर्शाया है । चतुर्थ मन्त्र में चैतन्य स्वरूप, स्वयं प्रकाश एवं विभु सर्वव्यापक आत्म तत्त्व का निरूपण है । पञ्चम एवं षष्ठ मन्त्रों में अविद्या अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान एवं विद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान पर सूक्ष्म चिन्तन निहित है । अन्तिम मन्त्र व्यावहारिक ज्ञान से लौकिक अभ्युदय एवं अध्यात्मज्ञान से अमरता की प्राप्ति को बतलाता है ।

इस पाठ्यांश से यह सन्देश मिलता है कि लौकिक एवं अध्यात्म विद्या एक-दूसरे की पूरक है तथा मानव जीवन की परिपूर्णता एवं सर्वाङ्गीण विकास में समान रूप से महत्व रखती है ।

पद्यांशोः/मन्त्रोः का अन्वय, शब्दार्थ, सप्रसंग हिन्दी भावार्थ एवं पठितावबोधनम्—

(1)

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुज्जीथा मा गृथः कस्यस्त्विदधनम्॥ 1 ॥

अन्वयः—जगत्यां यत् किञ्च जगत् इदम् सर्व ईशावास्यं, तेन त्यक्तेन भुज्जीथा:, कस्यस्त्विद् धनं मा गृथः: ।

शब्दार्थ—जगत्याम् = इस संसार में । यत् किञ्च = जो कुछ भी । जगत् = चराचर जगत् है । इदम् = यह । सर्वम् = सम्पूर्ण । ईशा = परब्रह्म परमेश्वर से । आवास्यम् = व्याप्त है, आच्छादित है । तेन = इसलिए । त्यक्तेन = त्यागपूर्वक अर्थात् आसक्ति रहित होकर । भुज्जीथा: = उपभोग करो । कस्यस्त्विद् = किसी के । धनम् = धन की । मा गृथः = आकांक्षा मत करो, लालच मत करो ।

प्रसंग—प्रस्तुत पद्यांश/मन्त्रांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'शाश्वती-भाग दो' के 'विद्ययाऽमृतमशनुते' शीर्षक पाठ से उद्धृत है । मूलतः यह पाठ 'ईशावास्योपनिषद्' से संकलित है । प्रस्तुत मन्त्रांश में ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता को दर्शाते हुए त्यागपूर्वक एवं लालच से रहित संसार के पदार्थों का उपभोग करने की प्रेरणा दी गई है ।

हिन्दी भावार्थ—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चराचरात्मक जगत् दृष्टिगत हो रहा है, वह सम्पूर्ण ईश्वर से व्याप्त है । इसलिए त्यागवृत्ति से इसका सेवन करो तथा किसी के भी (स्वकीय या परकीय) धन की आकांक्षा मत करो, उसके लिए लोभ मत करो । अर्थात् मानव को आसक्ति एवं लालच से रहित होकर पदार्थों का उपभोग करना चाहिए ।